• कविता...

अपना घर

एक-एक ईंट जोड़कर हमने ,
बनाया अपना सुन्दर घर।
अपने घर में रहें सहज हम,
दूजों के घर लगता डर।
बच्चे हों तो करते रौनक,
किलकारी से गूंजे घर।
बिन बच्चों के मकां है केवल,
सूना जैसे हो खंडहर।
घर हो तो हम उड़ें आसमां
लग जाते हैं जैसे 'पर'
घर जैसा भी होता घर है।
जीवन उसमें करें बसर।
आओ रलमिल बनायें सारे
इक दूजे का अपना घर...

■ दीनदयाल शर्मा

अब तो खाओ

ताक धिना-धिन ताल मिलाओ
हंसते जाओ,
गोरे-गोरे थाल कटोरे लो
चमकाओ!
चकला - बेलन मिलकर बेलें,
फूल - फुलकिया अम्मां मेरी
सेंक - सेंककर खूब फुलाओ!
भैया आओ अम्मां को भी
यहां बुलाओ,
प्यारी अम्मां सबने खाया
अब तो खाओ!

■ देवेंद्र कुमार

• चुटकुले...

पति– सुनो मुझे अलादीन का चिराग मिला है।
पत्नी– वाह आपने उससे क्या मांगा?
पति– मैंने कहा कि वह तुम्हारे दिमाग को 10 गुना और बढ़ा दे।
पत्नी– तो क्या उसने ऐसा कर दिया?
पति– वह हंसने लगा और बोला शून्य को किसी से भी गुणा कर दो वह शून्य ही रहता है।
अलादीन और पति दोनों गायब हैं...

पति – शादी के समय सात फेरे लेते वक्त तुमने वचन दिया था और स्वीकार किया था कि, मेरी इज्जत करोगी, मेरी सब बात मानोगी।
पत्नी – तो क्या इतने लोगो के सामने तुमसे बहस करती।

• जानकारी...

धरती पर सूरज के करीब जगह

जरा सोचिए, अगर आप किसी ऐसे पर्वत की चोटी पर खड़े हों जहां सूरज की किरणें लगभग सीधी पड़ें, हवा में चमक की चुभन महसूस हो और आंखें बिना चश्मे के खोलना मुश्किल हो जाए, तो आप धरती के उस बिंदु पर हैं जो सूरज के सबसे करीब है। यह जगह किसी सपने जैसी लगती है, लेकिन हकीकत में मौजूद है और वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित भी। यहां कदम रखते ही लगता है जैसे आसमान बस कुछ मीटर दूर है और सूरज की तपिश सीधे त्वचा में उतर रही हो।

कौन सी जगह है धरती पर सूरज के सबसे करीब- धरती पर जीवन के लिए सूरज सबसे बड़ी ऊर्जा का स्रोत है। उसकी रोशनी और गर्मी ही इंसान, पशु, पेड़-पौधों और पूरे पर्यावरण को संतुलित रखती है, लेकिन क्या आपने कभी सोचा है कि धरती पर कौन सी जगह सूरज के सबसे करीब है? आमतौर पर लोग समझते हैं कि माउंट एवरेस्ट ही वह स्थान होगा क्योंकि यह समुद्र तल से सबसे ऊंचा पर्वत है। लेकिन सच्चाई कुछ और है, धरती पर सूरज के सबसे करीब स्थित है इक्वाडोर का चिंबोराजो पर्वत।

यह पर्वत दक्षिण अमेरिका की एंडीज पर्वतमाला का हिस्सा है और एक सक्रिय ज्वालामुखी भी है। दिलचस्प बात यह है कि भले ही माउंट एवरेस्ट समुद्र तल से ऊंचा है, लेकिन पृथ्वी की आकृति यानी भूमध्यीय उभार के कारण चिंबोराजो पृथ्वी के केंद्र से सबसे दूर बिंदु है। यही वजह है कि यह सूर्य के सबसे नजदीक माना जाता है।

कितनी है इसकी ऊंचाई-चिंबोराजो पर्वत समुद्र तल से लगभग 6,263 मीटर (20,549 फीट) ऊंचा है, लेकिन पृथ्वी के केंद्र से इसकी दूरी लगभग 6,384 किलोमीटर है, जो एवरेस्ट से लगभग 2 किलोमीटर ज्यादा है. इसका मतलब यह हुआ कि जब कोई व्यक्ति चिंबोराजो की चोटी पर खड़ा होता है, तो वह धरती के किसी भी और इंसान की तुलना में सूरज के सबसे करीब होता है।

आंखें खुली रखना है नामुमकिन-यह जगह देखने में जितनी खूबसूरत है, उतनी ही चुनौतीपूर्ण भी है। यहां हवा बेहद पतली होती है, जिससे सांस लेना मुश्किल हो जाता है। सूरज की सीधी किरणें इतनी तेज होती हैं कि बिना सनग्लासेस के आंखें खुली रखना नामुमकिन हो जाता है। यहां आने वाले पर्यटक विशेष सनगियर और सुरक्षा उपकरणों के साथ ही ट्रेकिंग करते हैं।

फोटो खिंचाते हैं पर्यटक-इक्वाडोर में यह पर्वत न सिर्फ वैज्ञानिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि यह एक बड़ा पर्यटन स्थल भी है। यहां के पास ही स्थित है मिताद डेल मुंडो, जिसका अर्थ है दुनिया का मध्य। यह वह स्थान है जहां से भूमध्य रेखा गुजरती है। यहां एक प्रसिद्ध स्मारक और पीली रेखा है, जिसके एक तरफ उत्तरी और दूसरी तरफ दक्षिणी गोलार्ध है। पर्यटक यहां दोनों गोलार्धों में एक साथ एक-एक पैर रखकर फोटो खिंचवाते हैं,मानो एक ही वक्त में दो दुनिया में खड़े हों।

सोन मछली

जब मैं छोटा था तो माँ को पिताजी से यह कहते सुना करता था, ''कैसे विचित्र आदमी हो तुम! ठीक है, नाटक-सिनेमा के लिए तुम्हारे पास समय नहीं है, पर कभी-कभार मेरे लिए कुछ ला तो सकते हो–सेंट की शीशी या और कुछ। लाने को तो यह सब मैं खुद भी ला सकती हूँ, पर तुम कोई उपहार दो तो ज्यादा अच्छा लगेगा।''

मेरे पिता अध्यापकों के एक प्रशिक्षण महाविद्यालय में भूगोल के शिक्षक थे। जब वह घर पर होते, एक मोटी-सी किताब पढ़ते रहते।

एक दिन शाम के वक्त वह बड़े खुश-खुश लौटे और आते ही बोले, ''आज तुम कुछ नहीं कह सकोगी। लो, पकड़ो इसे, देखो इसमें क्या-क्या है। तुम्हारी तबीयत खुश हो जाएगी!'' यह कहते हुए उन्होंने अपना ब्रीफकेस आगे बढ़ा दिया।

माँ की खुशी का ठिकाना न रहा। मुझे सीने से लगाकर, कमरे में नाच-नाचकर गाने के लहजे में कहने लगीं, ''देखा जाए, तुम्हारे पिताजी क्या लाए हैं? देखा जाए...''

उन्होंने ब्रीफकेस को बड़े एहतियात से मेज पर रखकर खोला और तत्काल चौंककर बोलीं, ''यह क्या है? यह मेरे लिए क्या ले आए तुम? मर्दों के इस्तेमाल के 'यू डी कोलोन' का मैं क्या करूँगी? मैं क्या दाढ़ी बनाती हूँ? सचमुच तुम बच्चे ही रहोगे!''

माँ की आँखें डबडबा आई थीं और उनका हाथ काँप रहा था। माँ के दुःख से मैं भी दुखी हो उठा।

मेरी समझ में एक बात और आ गई। मैं और मेरे पिता एक ही भाषा में बात कर सकते हैं। माँ ने उन्हें बच्चा कहा था और मैं भी बच्चा था।

बस, मैं अपने पिताजी के पीछे पड़ गया, ''मेरे लिए एक सोन मछली ला दीजिए। ला देंगे न? उस बिल्ले के साथ खेलते-खेलते मैं ऊब गया हूँ। वह पंजे मारता है। मेरे लिए सोन मछली ला दीजिए।''

पिताजी से सोन मछली की माँग करने में मेरा एक उद्देश्य था। मेरी माँ पुश्किन की परी-कथाएँ सुनाया करती थीं। मछुआरे और सोन मछली की कहानी मुझे बड़ी अच्छी लगती थी। खासतौर पर जब वह जादुई मछली इनसानी आवाज में कहती है, ''ऐ बूढ़े, मुझे समुद्र में छोड़ दे, इसके बदले में मैं तुझे मालामाल कर दूँगी।''

मैं समझता था कि सोन मछली कोई साधारण मछली नहीं है। अगर वह हमारे घर में आ जाए तो माँ को रोज उपहार मिला करेंगे।

मेरे पिताजी ने अचरज के साथ पूछा, ''तुम्हें मछली चाहिए? यह तो मैं पहली बार सुन रहा हूँ। तुम्हारी माँ तो कुछ-न-कुछ लाने के लिए कहती ही रहती है, अब तुम भी कहने लगे। समझ में नहीं आता क्या करूँ। अच्छा, मान लो तुम्हारे लिए कवई या और कोई मछली ला दूँ तो?''

मैंने दृढ़ता से कहा, ''नहीं, मुझे तो सोन मछली ही चाहिए।''

आखिर वह राजी हो गए और बोले, ''अच्छा, ला दूँगा। पर तुम उसका करोगे क्या?''

मैंने बात को टालने के लिए कहा, ''मुझे कुछ काम है। पर देखिएगा, आप भी खुश हो जाएँगे।''

फिर एक दिन एक शीशे का मर्तबान लेकर हम जीव-जंतुओं की दुकान पर गए।

उस दुकान पर सारी सोन मछलियाँ ही थीं। जब हम लौटे तो मेरे हाथों में मछली रखने का काँच का एक बरतन था और मेरे पिताजी वह मर्तबान लिये हुए थे, जिसमें सोन मछली थी।

घर पहुँचकर हमने काँच के बरतन में थोड़ा बालू डाला और फिर उसमें गुनगुना पानी भरा। इसके बाद वह मछली उसमें डाल दी।

-जारी

एक दिन शाम के वक्त वह बड़े खुश-खुश लौटे और आते ही बोले, ''आज तुम कुछ नहीं कह सकोगी। लो, पकड़ो इसे, देखो इसमें क्या-क्या है। तुम्हारी तबीयत खुश हो जाएगी!'' यह कहते हुए उन्होंने अपना ब्रीफकेस आगे बढ़ा दिया।

माँ की खुशी का ठिकाना न रहा। मुझे सीने से लगाकर, कमरे में नाच-नाचकर गाने के लहजे में कहने लगीं, ''देखा जाए, तुम्हारे पिताजी क्या लाए हैं? देखा जाए...'' उन्होंने ब्रीफकेस को बड़े एहतियात से मेज पर रखकर खोला...

• रोचक...

जीपीएस स्पूफिंग

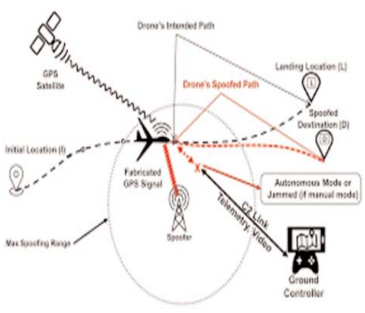

जीपीएस स्पूफिंग एक ऐसी तकनीक है, जिसमें नकली सैटेलाइट सिग्नल भेजकर किसी सिस्टम को भ्रमित किया जाता है। यानी असली जीपीएस की तरह दिखने वाले फर्जी सिग्नल हवाई जहाज के नेविगेशन सिस्टम में गलत लोकेशन, दिशा और समय की जानकारी भेजते हैं। ऐसे में पायलट को लगता है कि जहाज सही रास्ते पर है, जबकि वास्तव में वो रास्ते से भटक चुका होता है। यह तकनीक जैमिंग से अलग होती है। जैमिंग में सिग्नल पूरी तरह ब्लॉक कर दिए जाते हैं, जबकि स्पूफिंग में गलत डेटा भेजा जाता है, यानी पायलट्स को धोखा दिया जाता है। जीपीएस स्पूफिंग का सबसे बड़ा खतरा फ्लाइट की लैंडिंग और टेकऑफ के दौरान होता है, क्योंकि उस वक्त पायलट को सटीक लोकेशन और ऊंचाई की जानकारी चाहिए होती है। यदि गलत सिग्नल मिल जाए, तो जहाज गलत दिशा में उतर सकता है या रनवे मिस कर सकता है।

• मगरमच्छ...

इंसानों से लेकर जानवर तक आंख बंद करके सोते हैं। हालांकि, धरती पर पाए जाने वाले कुछ जानवर ऐसे होते हैं, जो सोते समय अपनी आंख खुली रखते हैं। दुनिया का सबसे खूंखार शिकारी जानवर मगरमच्छ उन जानवरों में से एक है, जो अपनी आंखें खोलकर सोता है। मगरमच्छ पानी के पास ही आराम करते हैं और सोते समय वह अपनी आंख को पूरी तरह बंद नहीं करते। इससे वह संभावित खतरे से भी अलर्ट रहते हैं और शिकार को भी हाथ से निकलने नहीं देते।